गोलालारीय समाज का मुखपत्र

golalariya.darshan@gmail.com
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com
9406744064

मासिक
गोलालारीय दर्शन

सफलता के 11 वर्ष

अपनों के साथ अपनी बातें

लेट पोस्टिंग

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/IDC/1252/2018-2020

सेवा में,

युवक युवती परिचय विशेषांक

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं। हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको समाज से प्यार नहीं।

वर्ष : 11 अंक : 2 पृष्ठ संख्या : 18 माह – 15 दिसम्बर 2019 सहयोग राशी 1100/– देकर सदस्य बनें।

जैन धर्म का सबसे बड़ा वैभव है सम्यग्दर्शन – मुनि सुब्रत सागर

विशाल जैन (पवा)। श्री स्वर्णभद्रादि मुनिराजों की निर्वाण स्थली वीर बुंदेलखंड के प्रसिद्ध सिद्ध क्षेत्र पावागिरीजी में परम पूज्य संत शिरोमणि उत्तर प्रदेश के राज्य अतिथि आचार्य गुरुवर श्री 108 विद्यासागाजी महाराज के मंगलमय आशीर्वाद, वात्सल्य मूर्ति बुंदेली संत कवि हृदय मुनि श्री 108 सुब्रत सागरजी महाराज के पावन सानिध्य और बा.ब्र. संजय भैयाजी मुरैना के निर्देशन में पंचकल्याणक के चौथे दिन अभिषेक, पूजन के उपरांत जन्म कल्याणक की क्रियाओं में तीर्थंकर बालक का जन्म, बधाईयां, सौधर्म इन्द्र का आसन कम्पायमान, ऐरावत हाथी पर अयोध्या नगरी की ओर प्रस्थान, शचि इन्द्राणि द्वारा तीर्थंकर बालक के दर्शन कराने की क्रियाएं, उपनयन संस्कार, दोपहर में जन्म कल्याणक जुलूस, 1008 कलशों से जन्माभिषेक एवं तीर्थंकर बालक का श्रृंगार रात्रि में महाआरती, सौधर्म इन्द्र का तांडवनृत्य, बाल क्रीडा, सांस्कृतिक कार्यक्रम के बाद सभी प्रतिमाओं का श्रृंगार किया गया। 3 से 9 दिसम्बर तक त्रिकाल चौबीसी सहित 151 जिनबिम्बों का श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा विश्व शांति महायज्ञ हवन एवं सप्त गजरथ महामहोत्सव के आयोजन के शुभारंभ पर ध्वजारोहण एवं मंडप उद्घाटन किया गया तत्पश्चात मंडप शुद्धि एवं पात्र शुद्धि की क्रियाएं की गयी। इस मौके पर मुनि सुब्रत सागर महाराज ने कहा तक इस ऐतिहासिक कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये किसी को ध्वजा नहीं सभी को नींव बनने की आवश्यकता है। सभी को एक दूसरे से प्रतियोगिता नहीं समन्वय स्थापित करना है, जिससे निश्चित ही पाषाण से परमात्मा बनने की क्रियाएं अलौकिक और अद्वितीय होगी। मुनिश्री का पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट क्षेत्र अध्यक्ष कैलाशचंद प्रवीण कुमार जैन विश्व परिवार झांसी ने किया। रात्रि में मंगल आरती एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

दूसरे दिन सुबह इन्द्र प्रतिष्ठा कलश स्थापना के उपरांत अभिषेक, शांतिधारा हुकुमचंद रविकुमार जैन अहमदाबाद ने की एवं पूजन विधान का आयोजन किया गया। इस मौके पर मुनि सुब्रत सागरजी महाराज ने कहा बेटा को बड़ा नहीं भला बनाने की भावना रखना चाहिए, हमें बच्चे को कामयाब से पहले काबिल बनाना है क्योंकि संस्कार ही सबसे बड़ी पूंजी है, सम्यकदर्शन जैनधर्म की सबसे बड़ी विभूति है। उन्होंने बच्चों को भी संदेश दिया कि ऐसा विवाह कदापि न करें जिसमें परिवार शामिल न हो, मुनिश्री ने कहा राम, महावीर, आचार्य विद्यासागर तो गर्भ में नहीं आ सकते लेकिन उन जैसे बेटे को जन्म देने की भावना हर मां को रखना चाहिए। 3 से 9 दिसम्बर तक त्रिकाल चौबीसी सहित

151 जिनबिम्बों का श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा विश्व शांति महायज्ञ हवन एवं सप्त गजरथ महामहोत्सव की क्रियाओं से पाषाण परमेश्वर बन जायेगा। दोपहर को राजीव जैन अशोक नगर के मधुर संगीत में याग मंडल विधान का भव्य आयोजन किया गया। मुनि सुब्रतसागरजी महाराज ने कहा कि यह महामंडल विधान आत्मा को परमात्मा बनाने का मांग प्रशस्त करता है। उन्होंने कहा कि दूसरों का हित चाहने वालों का स्वत: ही भला हो जाता है। मुनिश्री का पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट अनीता जैन अभाना ने किया। रात्रि में मंगल आरती राकेश कुमार दयाचंद जैन अहमदाबाद ने की, शास्त्र प्रवचन के बाद गर्भ कल्याणक पूर्व रुप की क्रियायें संपन्न की गयी जिसमें सौधर्म इन्द्रकी सभा, आसन कम्पायमान, सोलहकारण भावनाओं की प्रस्तुति, अष्ट कुमारियों द्वारा माता की सेवा, सोलह स्वप्न दर्शन एवं मध्य रात्रि में गर्भ की आंतरिक क्रियाएं की गयी।

तीसरे दिन सुबह अभिषेक के बाद शांतिधारा कोमलचंद अरविंदकुमार जैन जामनेर, महायज्ञ नायक राजेन्द्र कुमार राहुल जैन बबीना, तिलकचंद रहीश बबीना एवं मल्लिकुमार राहुल जैन मुख्य सचिव जबलपुर ने की। नित्यमय पूजन के उपरांत राजीव जैन अशोक नगर के मधुर संगीत में पंचकल्याणक महामंडल विधान एवं गर्भ कल्याणक की पूजन की गयी। दोपहर को माता की गोद भराई एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भव्य आयोजन किया गया। मुनिश्री सुब्रतसागरजी महाराज ने अपने उद्बोधन में बताया कि श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, लक्ष्मी आदि अष्ट देवियां तीर्थंकर बालक के जन्म के समय माता का श्रृंगार करती एवं उनमें लज्जा, धैर्य, यश, वैभव, पुष्ट शरीर और शांति का संचार करती हैं। मुनिश्री का पाद प्रक्षालन ज्योति सुमत जैन सीए झांसी, श्रीनंदन जैन टीकमगढ़ एवं शास्त्र भेंट वीरेन्द्रकुमार अमृत जैन ढकरई, सचिन कुमार जैन और सुरेश कुमार जैन कड़ेसरा ने किया। रात्रि में मंगल आरती श्रीमती आशा प्रसन्न जैन गुंदेरा परिवार ने की। शास्त्र प्रवचन के बाद गर्भ कल्याणक उत्तर रुप की क्रियाएं संपन्न की गयी। जिसमें छप्पन कुमारियों द्वारा माता की सेवा, श्रृंगार, देव वंदना, महाराज नाभिराय के दरबार में माता का आगमन एवं स्वप्न फलादेश की क्रियाएं की गयी। कार्यक्रम में बा.ब्र.अंशु भैया, असीम भैया, पं. उदयचंद्र शास्त्री सागर, पं. विनोद कुमार शास्त्री, पं. महेन्द्र जैन विदिशा, सौधर्म इन्द्र मनोज कुमार संजय जैन, कुबेर इन्द्र जयकुमार जैन ढकरई, ईशान इन्द्र सरोज जैन मडावरा, महामंडलेश्वर छोटेलाल राजेश कुमार बबीना, यज्ञनायक सुनील कुमार जैन बबीना, माहेन्द्र इन्द्र जयकुमार जैन बबीना, अभय कुमार, राजकुमार जैन, ओमप्रकाश ओरछा, उत्तमचंद, आनंद जैन, सिंघई सुमत, अशोक कुमार, विनोद बैरागी, चौधरी चक्रेश कुमार, प्रवीण जैन, विकास कुमार, पंकज जैन, सौरभ कड़ेसरा, आदेश मोदी सहित क्षेत्र प्रबंध समिति का सहयोग रहा। संचालन संजय भैया मुरैना एवं आभार व्यक्त ज्ञानचंद जैन पुरा ने किया।

सहयोगी – प्रचार मंत्री विनोद बैरागी

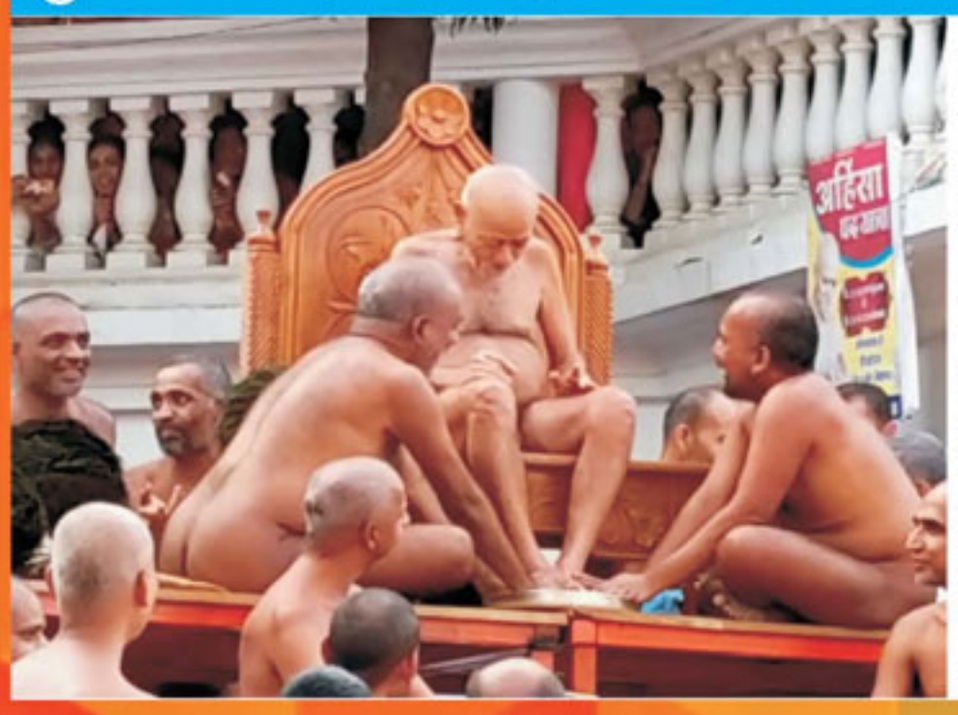

गुरु की आज्ञा मिले ही 15 दिन में 300 किमी. का पदविहार कर नेमावर पहुँचे प्रमाणसागरजी

अनुपमा जैन, इन्दौर। 15 साल 8 माह और 23 दिन के लंबे अंतराल के बाद मुनिश्री प्रमाणसागरजी महाराज और 10 साल 8 माह 23 दिन बाद मुनिश्री विराटसागरजी महाराज ने सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर में अपने गुरु आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी के दर्शन कर चरण पखारें तो दोनो ही मुनिराजों की आंखों से आंसू बह निकले।

अश्रुधारा और जल से मुनिद्वय ने अपने गुरु के पाद प्रक्षालन किये और गंधोदक को अपने सिर माथे पर लगाया। मुनिद्वय बावनगजा में चातुर्मास रत थे। गुरु की आज्ञा मिलते ही उनके दर्शन के लिए 15 नवम्बर को वहां से पद विहार करते हुए नेमावर पहुँचे। मुनिश्री प्रमाणसागरजी ने इसके पूर्व 8 मार्च 2004 को रामटेक और मुनिश्री विराटसागरजी ने 8 मार्च 2009 को जबलपुर में दर्शन कर उनकी आज्ञा और आशीर्वाद से विहार किया था। इस अवसर पर आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने कहा कि शिष्य अपने गुरु से दूर रहने पर शिकायत करते है लेकिन इन शिकायतों में भी कुछ न कुछ सीख होती है। हम अपना संदेश भेजने के लिए दूरभाष, कोरियर या पत्र का प्रयोग नहीं करते फिर भी हमारे संदेश शिष्यों तक पहुंच जाते है। इसके बारे में या तो सिर्फ वो जानते है या सिर्फ हम। इससे पूर्व मुनिद्वय की अगवानी के लिए आचार्यश्री के संघस्थ मुनि और जनसमुदाय गुराड़ियाफाटे पर पहुँचा। धर्मध्वजा और जयकारों के बीच मुनिगणों की अगवानी हुई। सभी मुनि महाराजों ने आचार्यश्री की परिक्रमा लगायी, यह दृश्य देखकर देश विदेश से आये हजारों श्रद्धालु भावविभोर हो गये।